सूरह — एक कहानी

सूरह अश-शूरा

मशवरा

पूरा सफ़र — नापा हुआ रिज़्क़, और आपस का मशवरा —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 42 • 53 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

लैस क-मिस्लिही शै-उंव्-व हुवस्-समी'उल्-बसीर

11. उसके जैसा कोई चीज़ नहीं, और वो सुनने वाला, देखने वाला है।

व लौ बसतल्-लाहुर्-रिज़्क़ लि-'इबादिही ल-बग़ौ फ़िल्-अर्ज़ि व लाकिंय्-युनज़्ज़िलु बि-क़दरिम्-मा यशा

27. और अगर अल्लाह अपने बंदों का रिज़्क़ कुशादा कर देता तो वो ज़मीन में सरकशी करते, मगर वो एक अंदाज़े से उतारता है जो चाहता है।

व मा असाबकुम मिम्-मुसीबतिन फ़-बिमा कसबत अय्दीकुम व य'फ़ू 'अन कसीर

30. और जो मुसीबत तुम्हें पहुँचती है वो तुम्हारे अपने हाथों के किए से है, और वो बहुत माफ़ कर देता है।

व अम्रुहुम शूरा बैनहुम

38. और उनका काम आपस के मशवरे से होता है।

फ़-मन 'अफ़ा व अस्लह फ़-अज्रुहू 'अलल्-लाह

40. तो जो माफ़ कर दे और सुलह कर ले उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे है।

व इन्नक ल-तह्दी इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम

52. और बेशक आप सीधे रास्ते की तरफ़ राह दिखाते हैं।

उसके जैसा कोई चीज़ नहीं

बेटा, ये सूरह 'हा मीम। 'ऐन सीन क़ाफ़' से खुलती है — और ये पूरे क़ुरआन में **वाहिद जगह** है जहाँ ये हुरूफ़ इस तरतीब में आते हैं।

और ये उनकी अज़मत बयान करती है: 'लहू मा फ़िस्-समावाति व मा फ़िल्-अर्ज़ि व हुवल्-'अलिय्युल्-'अज़ीम — उसी की है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और वो **सब से बुलंद, सब से बड़ा** है — **तकादुस्-समावातु यतफ़त्तरन मिन फ़ौक़िहिन्न** — आसमान अपने ऊपर से **तक़रीबन फट** जाते हैं।'

बेटा, **आसमान ख़ुद उनकी अज़मत से तक़रीबन चटख़ जाते हैं।** और उसी साँस में: '**वल्-मलाइकतु युसब्बिहून बि-हम्दि रब्बिहिम व यस्तग़्फ़िरून लि-मन फ़िल्-

अर्ज़** — और **फ़रिश्ते** अपने रब की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते हैं और **ज़मीन वालों के लिए मग़फ़िरत माँगते** हैं।'

बेटा, वहीं रुक जाइए। **अभी, फ़रिश्ते इस ज़मीन के लोगों के लिए मग़फ़िरत माँग रहे हैं — आपके लिए, बिना कभी आपसे मिले।** यही वो फ़िज़ा है जो ये सूरह क़ायम करती है: **कुचल देने वाली अज़मत, और कुचल देने वाली रहमत, उसी जगह।**

और फिर, बेटा, अल्लाह कौन हैं ये समझने के लिए क़ुरआन की सब से अहम आयतों में से एक: 'फ़ातिरुस्-समावाति वल्-अर्ज़ — आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला — ज'अल लकुम मिन अन्फ़ुसिकुम अज़्वाजंव्-व मिनल्-अन'आमि अज़्वाजा — उसने तुम्हारे लिए तुम्ही में से **जोड़े** बनाए — यज़्रु-उकुम फ़ीह — इस से तुम्हें **फैलाता** है — **लैस क-मिस्लिही शै** — **उसके जैसा कोई चीज़ नहीं** — **व हुवस्-समी'उल्-बसीर** — **और वो सुनने वाला, देखने वाला है।**'

बेटा, '**लैस क-मिस्लिही शै**' **अल्लाह के बारे में दुरुस्त अक़ीदे की बुनियाद है।** कोई चीज़ बिल्कुल उसके जैसी नहीं — न उसकी ज़ात में, न उसकी सिफ़ात में, न उसके अफ़आल में। **जो भी तस्वीर आपके ज़ेहन में बने वो वो नहीं**, क्योंकि आपका ज़ेहन सिर्फ़ मख़लूक़ चीज़ों से तस्वीरें जोड़ सकता है।

और दूसरा हिस्सा ग़ौर कीजिए, जिसे उलमा **हमेशा पहले के साथ** ज़िक्र करते हैं: 'और वो सुनने वाला, देखने वाला है।' बेटा, **यही मुतवाज़िन अक़ीदा है।** हम उसकी सिफ़ात का **इनकार नहीं** करते — वो सच्ची तरह सुनते और सच्ची तरह देखते हैं, जैसा उन्होंने ख़ुद को बयान किया। और हम उन्हें अपनी से **तशबीह नहीं** देते। **वो सुनते हैं — मगर हमारी क़िस्म के सुनने से नहीं।**

बेटा, **उस आयत के दोनों हिस्से एक साथ थामे रहिए और आप इस मौज़ू में कभी न भटकेंगे।**

रिज़्क़, ठीक नापा हुआ

और अब, बेटा, एक आयत जो हर सदी में मोमिनीन को सताने वाले सवाल का जवाब

देती है: **मुझे ज़्यादा क्यों नहीं दिया जाता?**

'**व लौ बसतल्लाहुर्-रिज़्क़ लि-'इबादिही ल-बग़ौ फ़िल्-अर्ज़** — और **अगर अल्लाह** अपने बंदों का **रिज़्क़ कुशादा** कर देता, तो **वो ज़मीन में सरकशी करते** — **व लाकिंय्-युनज़्ज़िलु बि-क़दरिम्-मा यशा** — मगर वो **अंदाज़े से उतारता** है जो चाहता है — **इन्नहू बि-'इबादिही ख़बीरुम्-बसीर** — बेशक, वो अपने बंदों से **बा-ख़बर, देखने** वाला है।'

बेटा, इसे आहिस्ता पढ़िए, क्योंकि **ये एक रुकावट के भेस में रहमत है।**

अल्लाह कहते हैं: **अगर मैं अपने बंदों को वो सब दे देता जो वो माँगते, वो ज़मीन पर ज़ालिम बन जाते।** '**बग़ौ**' — वो हद पार करते, ज़ुल्म करते, सरकशी करते, बे-लगाम हो जाते।

और बेटा, क्या ये सच नहीं? देखिए **अचानक पैसे या ताक़त के इज़ाफ़े का ज़्यादातर लोगों पर क्या असर होता है।** देखिए वही आदमी जो कम के साथ आजिज़ था **ज़्यादा के साथ ना-क़ाबिल-ए-बर्दाश्त** बन जाता है। अपने आप को देखिए: **क्या आप आसानी में ज़्यादा शुक्र-गुज़ार, ज़्यादा नमाज़ी, ज़्यादा रहीम हैं — या ज़रूरत में?**

तो अल्लाह '**युनज़्ज़िलु बि-क़दरिम्-मा यशा**' — **अंदाज़े** से उतारते हैं। **आपकी ज़रूरत से कम नहीं; उतना ज़्यादा भी नहीं जितना आप उस से बर्बाद हुए बग़ैर उठा सकें।**

बेटा, **इस आयत को आपकी बहुत सी शिकायत ख़त्म कर देनी चाहिए।** वो प्रमोशन जो न आई, वो सौदा जो हाथ से निकला, वो रक़म जो आप बार बार माँगते हैं — **अल्लाह आपके बारे में 'ख़बीर' हैं**: आपके **अंदर** जो है उस से बा-ख़बर, सिर्फ़ आपके हालात से नहीं। **वो ठीक जानते हैं कि आप कितनी दौलत थामे उस से पहले कि वो आपको थामना शुरू कर दे।**

'व हुवल्-लज़ी युनज़्ज़िलुल्-ग़ैस मिम्-ब'अ्दि मा क़नतू व यन्शुरु रहमतह — और वही है जो **बारिश उतारता** है उस के **बाद जब वो मायूस हो चुके**, और अपनी

रहमत **फैलाता** है — व हुवल्-वलिय्युल्-हमीद — और वो वली, लायक़-ए-तारीफ़ है।'

बेटा, उस आयत में बताया गया **वक़्त** देखिए: '**मिम्-ब'अ्दि मा क़नतू**' — उस के **बाद जब वो उम्मीद छोड़ चुके।** पहले नहीं। **अल्लाह की मदद अक्सर ठीक उस मुक़ाम पर आती है जहाँ इंसानी हिसाब फ़ाइल बंद कर चुका होता है।**

मुसीबत, और वो कितना माफ़ करते हैं

'**व मा असाबकुम मिम्-मुसीबतिन फ़-बिमा कसबत अय्दीकुम व य'फ़ू 'अन कसीर** — और जो **मुसीबत** तुम्हें पहुँचती है वो **तुम्हारे अपने हाथों** के किए से है — **और वो बहुत माफ़ कर देता है।**'

बेटा, इस आयत को **एहतियात से** समझना चाहिए, क्योंकि **इसका आसानी से ग़लत इस्तेमाल होता है।**

इसका मतलब ये **नहीं** कि हर तकलीफ़ में मुब्तला शख़्स सज़ा पा रहा है — क़ुरआन और सुन्नत उन आज़माइशों से भरे हैं जो **नेको-कारों के दर्जे बुलंद करने** को भेजी जाती हैं, और **सब से ज़्यादा आज़माए गए ख़ुद अंबिया** थे। तो किसी तकलीफ़ में पड़े शख़्स को देख कर ये नतीजा कभी मत निकालो कि उसने गुनाह किया होगा। **ये कई आज़माए गए मोमिन के दोस्तों की ग़लती थी।**

आयत जो सिखाती है वो ये कि **आप अपनी ख़ुद की मुश्किल को कैसे पढ़ें**: ख़ुद के जायज़े और तौबा के मौक़े के तौर पर, **दूसरों को इल्ज़ाम देने के तौर पर नहीं।** बेटा, ये एक मोमिन और बाक़ी सब के दरमियान बड़े फ़र्क़ों में से एक है। **जब मुश्किल आए, ज़्यादातर लोग पूछते हैं *'ये मेरे साथ किसने किया?'* मोमिन पूछता है *'मुझे अपने में क्या ठीक करना चाहिए?'***

और फिर दूसरा हिस्सा देखिए — वो हिस्सा जिसे लोग दौड़ते हुए गुज़र जाते हैं: '**व य'फ़ू 'अन कसीर**' — **और वो बहुत माफ़ कर देता है।**

बेटा, इस के साथ बैठिए। **अगर हर गुनाह अपनी मुमासिल सज़ा देता, तो हम में से

कोई एक हफ़्ता भी न जी सकता।** वो मुश्किलें जो हम तक पहुँचती हैं वो **एक बेहद बड़ी मिक़दार के पहले ही माफ़ हो जाने के बाद का छोटा सा बाक़ी-मांदा** हैं। अली (रज़ि0) के बारे में आता है कि उन्होंने कहा **ये मोमिन के लिए क़ुरआन की सब से पुर-उम्मीद आयत है।**

तो मुश्किल का दुरुस्त जवाब, बेटा, **एक मेल है**: मेरे हाथों ने जो कमाया उस के लिए **इस्तिग़फ़ार**, और कितना ख़ामोशी से माफ़ कर दिया गया उस का **शुक्र।**

उनका काम मशवरे से होता है

और अब, बेटा, वो हिस्सा जो इस सूरह को उसका नाम देता है — मोमिनीन का एक ऐसा बयान इतना ख़ूबसूरत कि **ये एक मुसलमान मुआशरे के लिए एक चेकलिस्ट का काम देता है।**

'व मा 'इंदल्लाहि ख़ैरुंव्-व अब्क़ा लिल्लज़ीन आमनू व 'अला रब्बिहिम यतवक्कलून — और जो अल्लाह के पास है वो **बेहतर** और ज़्यादा **बाक़ी** रहने वाला है उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और अपने रब पर **भरोसा** रखते हैं।'

और फिर फ़ेहरिस्त: 'वल्-लज़ीन यज्तनिबून कबा-इरल्-इस्मि वल्-फ़वाहिश — और जो **बड़े गुनाहों** और बे-हयाइयों से **बचते** हैं — **व इज़ा मा ग़ज़िबू हुम यग़्फ़िरून** — और **जब वो ग़ुस्से में होते हैं, वो माफ़ कर देते हैं।**'

बेटा, उस आख़िरी को ग़ौर से देखिए: *'उन्हें ग़ुस्सा नहीं आता'* नहीं — **उन्हें ग़ुस्सा आता है; ग़ुस्सा इंसानी है।** बयान ये है कि **ठीक ग़ुस्से की हालत में, वो माफ़ कर देते हैं।** यही इम्तिहान है, क्योंकि **ठंडा पड़ जाने के बाद माफ़ करना आसान है।**

'वल्-लज़ीनस्-तजाबू लि-रब्बिहिम व अक़ामुस्-सलात — और जो अपने रब की (पुकार पर) **लब्बैक** कहते और **नमाज़ क़ायम** करते हैं — **व अम्रुहुम शूरा बैनहुम** — **और जिनका काम उनके आपस के मशवरे से होता है** — व मिम्मा रज़क़्नाहुम युन्फ़िक़ून — और जो हमने उन्हें दिया उस में से **ख़र्च** करते हैं।'

बेटा, ग़ौर कीजिए अल्लाह ने **नमाज़ और सदक़े के दरमियान** क्या रखा है:

शूरा — आपस का मशवरा। ये **इबादत के आमाल की फ़ेहरिस्त के बीच में बैठा है**, जो आपको इस दीन में उसका दर्जा बताता है।

'व अम्रुहुम शूरा बैनहुम' — उनके मामलात आपस के मशवरे से तय होते हैं। बेटा, ये क़ुरआनी उसूल है कि **एक मोमिन मुआशरा एक आदमी की राय पर नहीं चलता।** और अल्लाह ने **अपने रसूल ﷺ को तक** — जिन पर वही उतरती थी — **अपने सहाबा से मशवरा करने का हुक्म दिया।** अगर **उन से** कहा गया मशवरा करो, **तो उनके बाद किसी के पास अकेले फ़ैसला करने का उज़्र नहीं।**

और बेटा, इसे **लफ़्ज़ी तौर पर घर ले आइए**: **शूरा घर से शुरू होती है।** ख़ानदानी फ़ैसलों में अपनी बीवी से मशवरा कीजिए। अपने बच्चों की राय पूछिए **और उन्हें संजीदगी से लीजिए।** अपनी टीम को बोलने दीजिए **उस से पहले** कि आप अपना फ़ैसला एलान करें। **एक शख़्स जो अपनी से अलग कोई राय सुनने को कभी तैयार नहीं वो इस आयत को ग़लत समझा है — और अक्सर इसके नतीजे में बुरे फ़ैसले करता है।**

'वल्-लज़ीन इज़ा असाबहुमुल्-बग़्यु हुम यन्तसिरून — और जो, जब उन पर **ज़ुल्म** पड़े, **अपना दिफ़ा** करते हैं।' बेटा, तवाज़ुन ग़ौर कीजिए: **ग़ुस्से में माफ़ करते, मगर ज़ुल्म के सामने बे-बस नहीं। इस्लाम न पायदान है न ज़ालिम।**

माफ़ करने का अज्र अल्लाह के ज़िम्मे है

और फिर, बेटा, माफ़ी के बारे में एक आयत जो हैरत-अंगेज़ बारीकी से अल्फ़ाज़ में डाली गई:

'**व जज़ा-उ सय्यि-अतिन सय्यि-अतुम्-मिस्लुहा** — और एक **बुराई** का **बदला उसी जैसी बुराई** है — **फ़-मन 'अफ़ा व अस्लह फ़-अज्रुहू 'अलल्लाह** — मगर **जो माफ़ कर दे और सुलह कर ले — उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे है** — इन्नहू ला युहिब्बुज़्-ज़ालिमीन — बेशक, वो ज़ालिमों को पसंद नहीं करता।'

बेटा, पहला हिस्सा लीजिए: **इंसाफ़ तुम्हें बराबर मिक़दार में जवाब देने की इजाज़त

देता है** — 'मिस्लुहा', **उसी जैसा।** उस से ज़्यादा नहीं। **बदले में भी, इस्लाम एक हद रखता है।** ज़्यादातर इंसानी इंतिक़ाम बढ़ता जाता है: *तुमने मुझे गाली दी, मैं तुम्हें तबाह कर दूँ।* **क़ुरआन इसे बराबरी पर बंद करता है।**

मगर फिर देखिए ये **कौन सा दरवाज़ा खोलता है**: 'फ़-मन 'अफ़ा **व अस्लह**' — जो **माफ़** कर दे और रिश्ता **मरम्मत** कर ले। और ग़ौर कीजिए: **सिर्फ़ माफ़ करना नहीं, बल्कि 'अस्लह' — जो टूटा उसे अमली तौर पर जोड़ना।**

और अज्र? '**फ़-अज्रुहू 'अलल्लाह**' — **उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे है।**

बेटा, **इस तरकीब पर रुक जाइए।** क़ुरआन ये नहीं कहता *'उसका बड़ा अज्र है'* या *'उसके लिए जन्नत है'* — **वो मिक़दार बताते ही नहीं।** वो कहते हैं: **ये मेरे ज़िम्मे है।** और जब अल्लाह किसी चीज़ को अपने ज़िम्मे लें और मिक़दार न बताएँ — **तो वो उस से कहीं ज़्यादा है जो गिनवाई जा सकती थी।**

बेटा, इसे उस शख़्स के लिए इस्तेमाल कीजिए जिसने आपको तकलीफ़ दी। आप बराबर बदला ले सकते हैं — **वो आपका हक़ है।** या आप माफ़ कर सकते हैं और रिश्ता जोड़ सकते हैं — **और फिर आपका मामला अल्लाह की ज़िम्मेदारी बन जाता है।** कौन सा सौदा बेहतर है?

और सूरह के आख़िर में, बेटा, नबी ﷺ को याद दिलाया जाता है: '**व इन्नक ल-तह्दी इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम** — और बेशक, **आप सीधे रास्ते की तरफ़ राह दिखाते हैं**' — और कहीं और वज़ाहत है कि हिदायत **देना** सिर्फ़ अल्लाह के हाथ में है। **राह दिखाना आपका काम है; दिल खोलना उनका।**

और आख़िरी लाइन: '**अला इलल्लाहि तसीरुल्-उमूर**' — **सुनो! सारे मामले अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. 'लैस क-मिस्लिही शै' और 'हुवस-समी'उल-बसीर' — दोनों एक साथ थामिए: न तशबीह, न सिफ़ात का इनकार।

2. फ़रिश्ते अभी इस ज़मीन वालों के लिए मग़फ़िरत माँग रहे हैं — कुचल देने वाली अज़मत और कुचल देने वाली रहमत, एक ही जगह।

3. आपका रिज़्क़ नापा हुआ है — आपकी ज़रूरत से कम नहीं, और इतना नहीं कि आप उस से बर्बाद हो जाएँ।

4. मदद अक्सर 'मायूस हो जाने के **बाद**' आती है — इंसानी हिसाब फ़ाइल बंद कर देता है, वो नहीं।

5. मुसीबत को ख़ुद के जायज़े के तौर पर पढ़िए, दूसरों के हिसाब के तौर पर नहीं — और याद रखिए 'व य'फ़ू 'अन कसीर'।

6. शूरा नमाज़ और सदक़े के दरमियान रखी गई — और वो घर से शुरू होती है।

7. बदला बराबरी पर बंद है, मगर माफ़ी का अज्र अल्लाह ने अपने ज़िम्मे लिया — और मिक़दार नहीं बताई।

या अल्लाह, हमें नापे हुए रिज़्क़ पर राज़ी रखिए, हमारे ग़ुस्से में हमें माफ़ करने वाला बनाइए, और हमारे मामलों को अपने ज़िम्मे ले लीजिए। आमीन।